International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 03-11-2019; Accepted: 05-12-2019
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 1; January 2020; Page No. 08-09

शहरी व वनवासी छात्राओं में संगीत अभिरुचि का अध्ययन

Divya Sathe[1], Dr. Vidya Joshi[2], Sharmila Tailor[3]
[1] Researcher, Manch Kala Vibhag Banasthali University, Rajasthan, India
[2] Principal Shri Rajendra Suri education College, Ujjain, Rajasthan, India
[3] Manch Kala Vibhag, Banasthali University Rajasthan, Rajasthan, India

सारांश

हमारे देश में विभिन्न वर्गों के लोग निवास करते है, जिनकी अपनी संस्कृति, सभ्यता व रीति-रिवाज है। अनेक उत्सवों पर हमारे देसज में अलग-अलग गीतों के माध्यम से प्रस्तुति की जाती है। हमारा एक वर्ग वनवासी क्षेत्रों में निवास करता है ये भी अलग-अलग उत्सवों-पर्वों-त्योहारों पर गीतों द्वारा अपनी भावनाओं को व्यक्त करते है। इनकी शैली, भाषा, बोल, भावाभिव्यक्ति में अंतर है। वनवासी क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को शिक्षा देने के लिए शहरों में सुविधाएँ दी जा रही है।

कुछ मनोवैज्ञानिक अध्ययन वनवासी विद्यार्थियों की स्वअवधारणा पर आधारित हुए है जिनमें माध्य का मान कम पाया गया। जिसके आधार पर उनके दृढ़ विश्वास व आत्मविश्वास में कमी दिखाई देती है। वनवासी क्षेत्र की छात्राओं को शहरी मुख्य धरा से जोड़ने के लिए प्रस्तुत अध्ययन किया गया जिसमें ललित कलाओं के अंतर्गत संगीत के प्रति उनकी अभीरूचि जानने का प्रयास किया गया।

मूल शब्द: संगीत अभिरुचि, वनवासी छात्राएँ, शहरी छात्राएँ, ललित कलाएं

प्रस्तावना

संसार में जन्म लेने के बाद से ही मानव ने अनेक ध्वनियों को सुना। उनमें से कुछ ध्वनियाँ सुनाने लायक अर्थात् कर्णप्रिय थी व कुछ कोलाहल करने वाली थी। जो ध्वनियाँ सुनाने लायक थी उसे संगीत कहा गया. प्रत्येक व्यक्ति की अपनी कुछ रुचियाँ होती है जैसे कविता बनाना, भाषण देना, चित्रकारी करना, नृत्य करना, वाद्य बजाना, गीत गाना इन रुचियों के साथ उसका मनोरंजन तो होता है उसके व्यक्तित्व में भी बदलाव आता है अर्थात् उसका विकास होता है।

पुरातन काल से संगीत हमारे सृष्टि में विद्यमान है। होम हवन करने पर ऋचाओं का विशेष पद्धति से गायन, सुबह मन्त्रों का विशेष लय में उच्चारण, भगवान की आराधना में प्रार्थना, भजन, इसके साथ ही मानव पर किये जाने वाले संस्कारों में भी प्रत्येक क्षण संगीत से जुड़ा है अर्थात् हम कह सकते है कि मानव के जन्म से लेकर मृत्यु तक संगीत का संबंध है। वर्तमान में हम देखते है कि संगीत के प्रति सामान्य सम्मान बढ़ता जा रहा है। संगीत की सभी विधाओं को पसंद किया जा रहा है, मान्य किया जा रहा है। सामान्य व्यक्ति से लेकर विद्यार्थी भी इससे प्रभावित हो रहे है। विद्यार्थी पढ़ते समय किसी न किसी प्रकार का संगीत सुनते है। नहाते समय गीत गुनगुनाते है। खेलते समय भी संगीत का प्रयोग किया जाता है।

आधुनिक प्रणाली से संगीत का प्रयोग कर तैराकी व जिमनास्टिक में उत्कृष्ट प्रदर्शन देश तथा विदेशों में किया जा रहा है।

परन्तु प्रश्न यह उठता है कि गाना सुनना, स्वयं गाना, गाना गुनगुनाना, नए गीतों की ओर आकृष्ट होना, गीतों की डायरी बनाना, वास्तव में छात्रों के संगीत सम्मान को दर्शाती है।

समस्या:

"वनवासी छात्राओं तथा शहरी छात्राओं में संगीत के प्रति अभिरुचि का अध्ययन करना।"

अध्ययन की आवश्यकता

हमारे देश में विभिन्न वर्गों के लोग निवास करते है, जिनकी अपनी संस्कृति, सभ्यता व रीति-रिवाज है। अनेक उत्सवों पर हमारे देसज में अलग-अलग गीतों के माध्यम से प्रस्तुति की जाती है। हमारा एक वर्ग वनवासी क्षेत्रों में निवास करता है ये भी अलग-अलग उत्सवों-पर्वों-त्योहारों पर गीतों द्वारा अपनी भावनाओं को व्यक्त करते है। इनकी शैली, भाषा, बोल, भावाभिव्यक्ति में अंतर है। वनवासी क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को शिक्षा देने के लिए शहरों में सुविधाएँ दी जा रही है। इसी के तहत वनवासी क्षेत्र झाबुआ से 36 छात्रों के शिक्षण का दायित्व लोकमान्य तिलक शिक्षण समिति ने लिया. इन छात्राओं को 6ठी कक्षा में प्रवेश दिया गया। इन्हें डी-वर्ग में अलग रखकर अध्यापन की व्यवस्था की गयी। यह छात्राएं वनवासी परिवेश से पहली बार शहरी परिवेश में शिक्षा प्राप्त करने के लिए आई थी। परिवेश के अंतर के कारण उच्चारण व लेखन में सामान्य बालक बालिकाओं से अंतर दिखाई दे रहा था। परन्तु बाल सभाओं में पाठ्य सहगामी क्रियाओं में इनकी सहभागिता संतोषजनक प्रतीत हो रही थी इस आधार पर इस अध्ययन में यह देखने का प्रयास किया गया कि यह छात्राएं संगीत के क्षेत्र में शहरी छात्राओं की समानता क्या है?

कुछ मनोवैज्ञानिक अध्ययन वनवासी विद्यार्थियों की स्वअवधारणा पर आधारित हुए है जिनमें माध्य का मान कम पाया गया। जिसके आधार पर उनके दृढ़ विश्वास व आत्मविश्वास में कमी दिखाई देती है। वनवासी क्षेत्र की छात्राओं को शहरी मुख्य धरा से जोड़ने के लिए प्रस्तुत अध्ययन किया गया जिसमें ललित कलाओं के अंतर्गत संगीत के प्रति उनकी अभीरूचि जानने का प्रयास किया गया।

उद्देश्य

माध्यमिक स्तर की शहरी छात्राओं तथा वनवासी क्षेत्र की छात्राओं में संगीत के प्रति अभिरुचि का तुलनात्मक आकलन करना।

परिकल्पना

माध्यमिक स्तर की शहरी छात्राओं तथा वनवासी क्षेत्र की छात्राओं में संगीत के अभिरुचि के प्रति कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध के लिए उज्जैन शहर के लोकमान्य तिलक माध्यमिक विद्यालय की कक्षा 6 ब व 6 डी जिसमें वनवासी क्षेत्र की छात्राएँ है उनका चयन न्यादर्श के रूप में किया गया। न्यादर्श के रूप में 65 छात्राओं को सम्मिलित किया गया।

जिसमें 32 छात्राएँ उज्जैन नगर की है व 33 छात्राएँ वनवासी क्षेत्र की है। जिनकी आयु 12 से 13 वर्ष के मध्य है। इन छात्राओं का विवरण सारणी क्रमांक 1 में

प्रस्तुत है।

सारणी क्रमांक 1

विद्यालय अनुसार विद्यार्थियों की संख्या

क्र.	विद्यालय का नाम	कक्षा	शहरी छात्रा	वनवासी छात्रा	कुल छात्राएँ
1.	लोकमान्य तिलक मा. वि. उज्जैन	6 B	32	_	32
2.	लोकमान्य तिलक मा. वि. उज्जैन	6 D	_	33	33
			32	33	65

उपकरण

छात्राओं मव संगीत अभिरुचि के प्रभाव के अध्ययन के लिए श्रीमती जी. नायक द्वारा निर्मित 'संगीत अभिरुचि' मापनी M.I.S. के द्वारा किया गया। प्रस्तुत अध्ययन में सम्मिलित चरों का विवरण सारणी क्रमांक 2 में दिया गया है।

सारणी क्रमांक 2

स्वतंत्र चर	परतंत्र चर	अन्य चर
संगीत अभिरुचि परीक्षण	छात्राओं की संगीत अभिरुचि का स्तर	शहरी छात्रायें व वनवासी छात्रायें

प्रशासन एवं अंकीकरण

इस मापनी में संगीत से संबंधित 48 प्रश्न दिए गए थे। इस परीक्षण में लगाने वाला समय 30 मिनट था। प्रत्येक प्रश्न के सामने दो विकल्प 'हाँ' और 'नहीं' लिखे गए है। विद्यार्थियों को ध्यानपूर्वक पढ़कर कथन से सहमत होने पर हाँ वाले खाने में (√) का निशान लगाना था व कथन से असहमत होने पर नहीं वाले खाने में (√) का निशाँ लगाना था। इस मापनी की विश्वसनीयता के लिए प्रत्येक सही उत्तर के लिए एक अंक निर्धारित किया गया था।

सारणी क्रमांक 3: शहरी एवं वनवासी लड़कियों के संगीत अभिरुचि के माध्यों के आधार पर टी-मान

	N	M	SD	t Value
शहरी छात्राएँ	32	38.03	5.23	6.65*
वनवासी छात्राएँ	33	23.33	6.70	

*0.01 स्तर पर सार्थक

विश्लेषण तथा निष्कर्ष

सारणी क्रमांक 3 में प्रदर्शित परिणामों में t का मान 6.65 है जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक पाया गया। यह मान प्रदर्शित करते है कि शहरी एवं वनवासी छात्राओं की संगीत के प्रति अभिरुचि में सार्थक अंतर है। इस आधार पर शून्य परिकल्पना कि "सामान्य छात्राओं तथा वनवासी छात्राओं की संगीत के प्रति अभिरुचि में कोई सार्थक अंतर नहीं देखा जाएगा" निरस्त की जाती है। सामान्य छात्राओं की अभिरुचि का माध्य (M=38.03), वनवासी छात्राओं के माध्य (M=23.33) सार्थक उच्च स्तरीय है।

विद्यालयीन गतिविधियों के अंतर्गत वनवासी छात्राओं की लोकगीतों की प्रस्तुति तो श्रेष्ठ पायी गयी परन्तु अभिरुचि परीक्षण के आधार पर पायी गयी संगीत के प्रति अभिरुचि शहरी छात्राओं से कम पायी गयी।

निष्कर्ष

तालिका क्रमांक 3 के परिणामों के आधार पर ये कहा जा सकता है कि शहरी छात्राओं में संगीत के प्रति अधिक रूचि जागरूकता उनको मिलने वाले वातावरण, विद्यालय की गतिविधियाँ व अन्य आधुनिक उपकरणों के प्रयोग के कारण अधिक पायी गयी इसके विपरीत वनवासी छात्राओं में संगीत के प्रति अभिरुचि कम पायी गयी इसके कई कारण हो सकते है।

संगीत अभिरुचि परीक्षण में पूछे गए अनेक प्रश्न शहरी परिवेश से संबंधित थे जिनसे वनवासी क्षेत्र से आई छात्राएँ अवगत नहीं थी। एक वर्ष के शहरी संपर्क में वनवासी छात्राओं में पर्याप्त आया। विद्यालय के शिक्षण तथा पाठ्य सहगामी क्रियाओं के आयोजनों के माध्यम से ललित कलाओं के क्षेत्र में वनवासी क्षेत्र की छात्राओं के विकास की सम्भावन है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचि

1. डॉ. वर्मा प्रीति, (2014-2015), आधुनिक सामान्य मनोविज्ञान, अग्रवाल पब्लिकेशन.
2. कुलकर्णी वसुधा, (१९९०), भारतीय संगीत एवं मनोविज्ञान, राजस्थानी ग्रंथासार, जोधपुर.
3ण शर्मा आर. ए, (2011), शिक्षा के तकनिकी आधार, आर लाल बुक डेपो मेरठ.